॥ श्री ज्ञानसरस्वती (बासर) भक्तिधारास्तोत्रम् ॥

१। विहित नमस्कार शरण्यां सुखप्रदाम्
ओंकारपूरित नामार्चनां शुभप्रदाम्
पुरस्कार सहित दर्शनां फलप्रदाम्
बासर क्षेत्र देवीं भज सरस्वतीमातरम्॥
२ । पंचामृताभिषेकेन कामितफलदायिकाम्
नैवेद्यनिवेदनेन सकलार्थसाधिकाम्
नीराजनदर्शनेन सकलार्थसाधिकाम्
बासर क्षेत्र देवीं भज सरस्वतीमातरम्॥
३। तव पादाब्जस्पर्शनं पापहरणम्
तव कटाक्षवीक्षणंरोगनिवारणम्
तव मंत्राक्षतरक्षणं शुभकरणम्
बासर क्षेत्रदेवीं भज सरस्वतीमातरम्॥
४। नमोस्कु वेदव्यासनिर्मितप्रतिष्ठितायै
नमोस्तु महालक्ष्मीमहाकालीसमेतायो
नमोस्तु अष्टतीर्थजलमहिमान्वितायै
नमोस्तु बासर क्षेत्रे विलसितायै॥
५। नमोस्तु गोदावरीतटनिवासिन्यै
नमोस्तु कृपाकटाक्षस्वरूपायै
नमोस्तु स्मृतिमात्रप्रसन्नायै
नमोस्तु बासरक्षेत्रे विलसितायै॥
६। नमोस्तु मनोहरपुष्वालंकृतायै
नमोस्तु ज्ञानमूलायै ज्ञानगम्यायै
नमोस्तु गुरुभक्तिरहस्यप्रकटितायै
नमोस्तु बासरक्षेत्रे विलसितायै॥
७। नमोस्तु मंडलदीक्षाभिक्षामहादात्यै
नमोस्तु महामंत्रतंत्रप्रवीणायै
नमोस्तु सहस्रारचक्रनिलयायै
नमोस्तु बासर क्षेत्रे विलसितायै॥
८। नमोस्तु सर्वपापसंहारिकायै
नमोस्तु योगियोगिनीगणसंसेवितायै
नमोस्तु सकलकल्याणशुभदायै
नमोस्तु बासरक्षेत्रे विलसितायै॥

९आमदासेन विरचितमिदं पठते भक्तिमा न्नरः
विद्यां श्रेयो विपुलसौख्यं प्राप्नोति।
श्रीज्ञान सरस्वती संपूर्णानुग्रहास्तु।

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com
Last updated April 1, 2002